हिंदी साहित्य के उन्नयन में मराठी भाषी लेखकों का योगदान

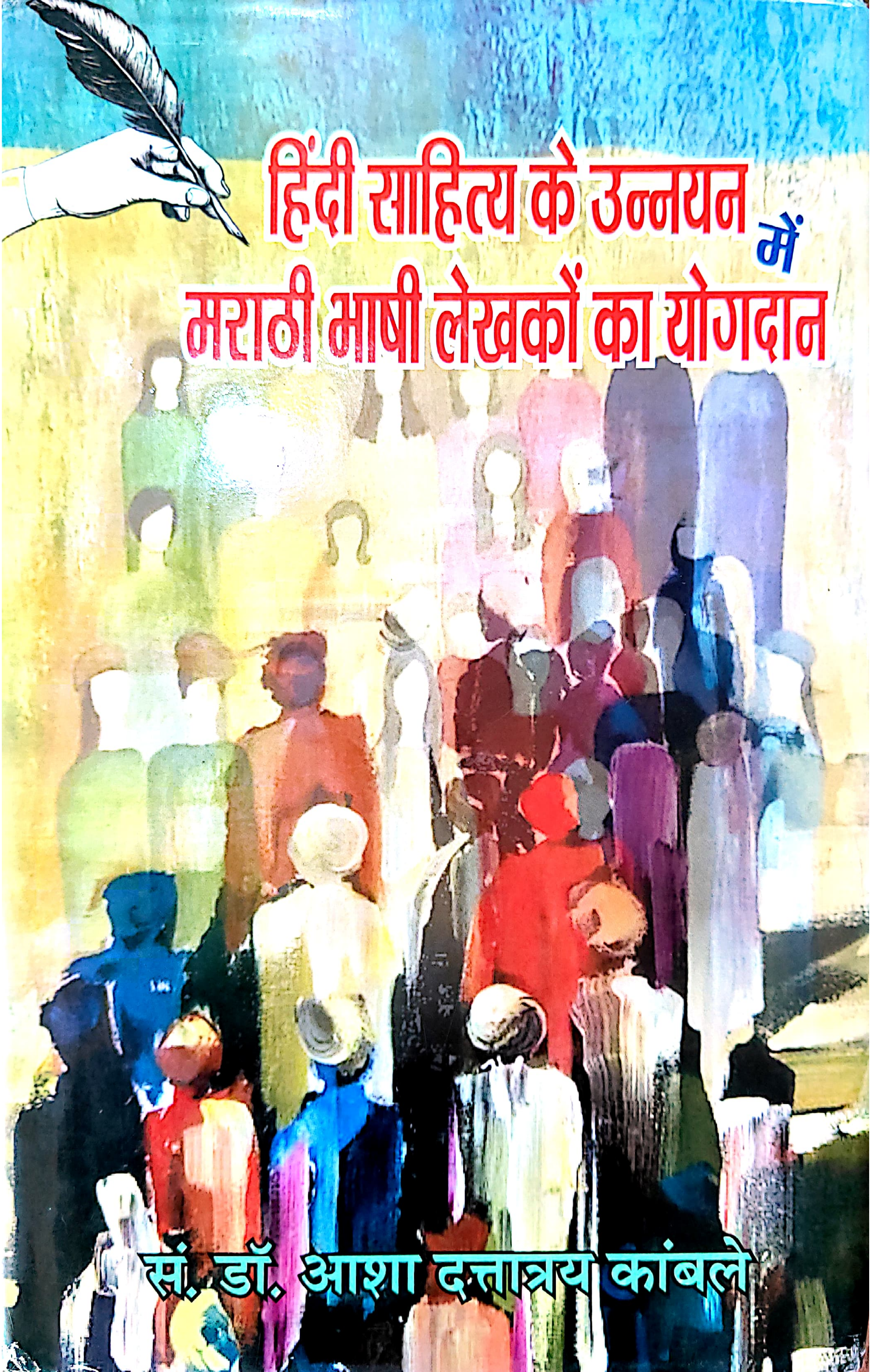

सं. डॉ. आशा दत्तात्रय कांबले

हिंदी साहित्य के उन्नयन में मराठी भाषी लेखकों का योगदान

संपादिका
डॉ. आशा कांबले

वान्या पब्लिकेशंस
कानपुर – 208021 (उ.प्र.)

ISBN 978-93-90052-66-0
मूल्य : सात सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	**हिंदी साहित्य के उन्नयन में मराठी भाषी लेखकों का योगदान**
संपादिका	:	डॉ. आशा कांबले
©	:	संपादिका
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर – 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2024**
मूल्य	:	**750/-**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

30. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण
डॉ. दीपक रामा तुपे 196

31. समीक्षा की समीक्षक रमा बुलबुले-नवले...
डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे 206

32. डॉ. सतीश यादव का रचनाकर्म
डॉ. नयन भादुले-राजमाने 213

33. हिंदी आलोचना को नई दिशा देनेवाले मराठी भाषी आलोचक डॉ. रणजीत जाधव
प्रा. डॉ. जयराम सूर्यवंशी 220

34. डॉ. दीपक पाटील का हिन्दी भाषा के विकास में योगदान
अनिता गुलाबराव खैरनार 226

35. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का वास्तव : एक और द्रोणाचार्य
डॉ. तुकाराम दौड़ 232

36. फिल्म दिग्दर्शक, निर्माता एवं लेखक आशुतोष गोवारिकर का हिंदी विकास में योगदान
डॉ. राहुल सुरेश भदाणे 241

37. गुणाकार मुले का हिंदी प्रचार प्रसार में योगदान
प्रा. भैयाकुमार मंगळे 245

30
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण

डॉ. दीपक रामा तुपे

वस्तुतः कुछ लोग अपने जीवन में अहंकार से दूर रहते हैं, जिनके पाँव जमीन पर होते हैं, बुद्धिनिष्ठ होने के बावजूद विद्वत्ता का लबादा कभी नहीं ओढ़ते। वे हमेशा ज़मीन से जुड़े रहते हैं, ठेठ देहात से आते हैं, सालोंसाल शहर में रहते हैं, लेकिन शहरी आबोहवा का इस्तेमाल वे केवल साँस लेने के लिए करते हैं। शहर की अहंकारी हवा को वे कभी आगोश में नहीं लेते। जिनकी करनी और कथनी में अंतर नहीं होता, जो सही को सही और गलत को गलत कहते हैं और जो दूसरों का हौसला बुलंद करते हैं। ऐसे ही एक विरले व्यक्तित्व में धनी हैं– शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग के पूर्वाध्यक्ष आदरणीय गुरुवर्य प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाणं सर! प्रो. (डॉ.) चव्हाण जी का व्यक्तित्व इस दृष्टि से बहुआयामी है; जिसमें मौलिक चिंतक, आदर्श विभागाध्यक्ष, कुशल संगठक, अध्यापक, कवि, गजलकार, समीक्षक, नाटककार, कहानीकार, निबंधकार, यात्रावृत्तांकार, अनुवादक, संपादक, अनुसंधाता, अन्वेषक आदि अनेक रूप शामिल हैं। तभी तो उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व शोध का विषय बन जाता है।

जन्मस्थान एवं जन्मतिथि : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी का जन्म पाठशाला रिकॉर्ड के अनुसार 12 अप्रैल, 2061 को महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के परंडा तहसील स्थित ग्राम पारेवाडी में हुआ।

परिवार : ग्रामीण आदिम किसान परिवार में जन्में डॉ. चव्हाण जी के घर शिक्षा परंपरा का पूरी तरह से अभाव था। कृषि ही आपके जीवनकोपार्जन का साधन हुआ करती थी। आपके पिता का नाम गणपति दगडू चव्हाण है और माता का नाम सीतावाई गणपति चव्हाण है। 3 दिसंबर, 1990 में आपका विवाह अनीता जी के साथ हुआ। उन्हें एक बेटा और दो बेटियाँ हैं। बेटा भूषण सायकोलोजिस्ट है जबकि पहली बेटी अमृता एडवोकेट है और दूसरी बेटी चारुता डॉक्टर (मटेरिया मेडिको) है।

शिक्षा–दीक्षा : प्रो. चव्हाण जी की प्राथमिक शिक्षा अपने जन्म गाँव पारेवाडी में ही हुई। आपकी माध्यमिक की पढ़ाई जिला परिषद, डोंजा में और उच्च माध्यमिक की पढ़ाई भी जिला परिषद माध्यमिक शाला, सोनारी में हुई। आपकी कनिष्ठ महाविद्यालय की पढ़ाई जिला परिषद उच्च माध्यमिक शाला, परंडा में हुई। आपकी वरिष्ठ महाविद्यालय की पढ़ाई श्रीमान भाऊसाहेब झाडवुके महाविद्यालय, वार्शी में हुई। आपने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से एम.ए. तथा पीएच. डी. (हिंदी) की उपाधियाँ हासिल की।

नौकरी : प्रो. चव्हाण जी ने कई महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया है। श्रीमती मथुबाई गरवारे महाविद्यालय, सांगली, शिवशाहू महाविद्यालय, सरुड, कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, इस्लामपुर में अध्यापन–कार्य किया। 3 जुलाई, 1993 से 30 अप्रैल, 2021 तक आपने शिवाजी विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक, सहयोगी प्राध्यापक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक के रूप में 35 साल से अधिक अध्यापन का कार्य किया है।

व्यक्तिगत विशेषताएँ

1. ईमानदार : प्रो. अर्जुन चव्हाण जी का व्यक्तित्व ईमानदार एवं प्रामाणिक नजर आते हैं। प्रेम, प्रेरणा और परामर्श से वे दूसरों का दिल जीत लेते हैं। डॉ. चव्हाण जी की ईमानदारी के बारे में अरविंद वाजपेयी लिखते हैं–"डॉ. अर्जुन चव्हाण उस शख्सियत का नाम है जो सब के लिए सहृय, मृदुभाषी, मिलनसार, कर्मठ और अपने कार्यों के प्रति बेहद ईमानदार है। सभी के प्रति सहयोग की भावना इनके व्यक्तित्व को खूबसूरत वना देती हैं।"[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि अपने कार्यों के प्रति ईमानदार होने के बावजूद सहृयता, मृदुभाषी, मिलनसार, कर्मठता डॉ. चव्हाण जी व्यक्तित्व के अभिन्न पहलू हैं जो पहली बार मिलने वाले सज्जन को आकर्षित किए बिना नहीं रहते। सौहार्द, सहयोग और प्रेम से वे सबका दिल जीत लेते हैं।

2. मौलिक चिंतक : प्रो. अर्जुन चव्हाण जी परंपरावादी एवं रूढ़िवादी चिंतक नहीं हैं बल्कि वे प्रगतिशील एवं मौलिक चिंतक हैं। वे शोध, समीक्षा, सृजन और चिंतन के क्षेत्र में लीक से हटकर सोचते हैं। उनका चिंतन नए मान्यताओं, नई मापदंडों और नए विचारों को जन्म देता है। डॉ. मिलिंद कांवळे के शब्दों में– "आप रूढ़िवादी तथा परंपरावादी चिंतन को त्याग कर मौलिक चिंतन की स्थापना करते हैं। आपके विचारों में हमें हर पल नया और मौलिक ज्ञान सुनने को मिलता है।"[2] अतः इसमें संदेह नहीं है कि डॉ. चव्हाण जी एक मौलिक चिंतक है; जिसका प्रमाण उनकी हर किताब से मिलता है।

3. कुशल संगठक : प्रो. चव्हाण जी एक कुशल संगठक हैं। विश्वविद्यालय

में अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन हो या संगोष्ठी और कार्यशालाओं का संयोजन हो, सबको साथ लेकर वे बखूबी पूरा करते हैं। हालाँकि उनके व्यक्तित्व में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और मानवीय गुणों का अनोखा संगम पाया जाता है। उनके बारे में डॉ. मिलिंद कांबळे की मान्यता है कि "प्रोफेसर डॉ. अर्जुन चव्हाण सर जी का व्यक्तित्व वटवृक्ष की भाँति है। इसलिए इनमें निहित सूझ–बूझ, सभी को साथ लेकर चलने की भावना, कर्म के प्रति लगन, कर्तव्यनिष्ठा, सद्भावना, साहित्य–ज्ञान एवं कार्यक्षमता, योग्यता, संगठन शक्ति, कुशल एवं विनयशील प्राध्यापक, विभाग प्रमुख, सफल शोध निर्देशक आदि कार्य गुण एक ऋषि की साधना की भाँति है।"[3] उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि डॉ. चव्हाण जी एक कुशल संगठक के साथ–साथ ज्ञानी, विनयशील, कर्तव्यनिष्ठ, लगनशील और शुभाकांक्षी व्यक्तित्व के धनी हैं। वे सबको सरलता, सहजता, सहृयता और आत्मीयता से पेश आते हैं जो उनके व्यक्तित्व का अद्वितीय पहलू है।

4. प्रभावी वक्ता : प्रो. अर्जुन चव्हाण जी एक प्रभावी वक्ता हैं, जो सहज और शालीन वाणी की मिठास से श्रोताओं पर अपना प्रभाव जमाते हैं। उन्होंने तकरीबन 450 से अधिक राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, अधिवेशनों तथा कार्यशालाओं में बीजभाषक, मुख्य वक्ता, अतिथि, विशेषज्ञ और संसाधन व्यक्ति के रूप में व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने कोरोना काल में 100 से अधिक राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में अध्यक्ष, बीजभाषक, मुख्य वक्ता, अतिथि और विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिए हैं। इतना ही नहीं; उन्होंने मॉरीशस, रूस और उजबेकिस्तान जैसे देशों में विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिए हैं। इससे साफ जाहीर है कि डॉ. चव्हाण जी विषय के साथ न्याय देने में माहिर हैं। हर संगोष्ठी में व्याख्यान होने के बाद उनको मिलने के लिए तांता लगा रहता है और लोग उनके तारीफ के पुल बांधते नजर आते हैं। अवकाश ग्रहण करने के वावजूद वे काफी व्यस्त हो गए। वे आज भी अनेकानेक संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं में अध्यक्ष, बीजभाषक, मुख्य वक्ता, अतिथि और विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित होते रहते हैं, जो उनके प्रभावी वक्ता होने का प्रमाण है। उनका हर व्याख्यान श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है।

पुरस्कार एवं सम्मान : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी को हिंदी साहित्य अकादमी मॉरीशस सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान, यात्रा वृत्तांत लेखन प्रथम पुरस्कार, भारत से वाहर भारत यात्रा वृत्तांत लेखन सम्मान, साहित्य निधि सम्मान, हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार, अहिंदी भाषी हिंदी लेखक राष्ट्रीय पुरस्कार, श्रेष्ठ सृजनात्मक साहित्य सम्मान, राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्राब्दी सम्मान, युवा प्रेरक मार्गदर्शक सम्मान, भारतेंदु भूषण राष्ट्रीय सम्मान, पाब्लो नेरुदा इंटरनेशनल

अवॉर्ड फॉर एक्सलन्स इन लिटरेचर, राजरत्न सद्भावना पुरस्कार, सुब्रहमण्य भारती साहित्य सेतु, जीवन गौरव पुरस्कार, हिंदी सेवा सम्मान, हिंदी भूषण सम्मान और हिंदी आदर्श शिक्षक पुरस्कार आदि ऐसे अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

सम्प्रति : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी अवकाश ग्रहण करने के वावजूद शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अतिथि प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। साथ ही वे आज स्वतंत्र लेखन कार्य कर रहे हैं। हम जैसे छात्रों को लगता था कि अवकाश ग्रहण करने के बाद सर हमें समय दे पाएँगे बल्कि वे काफी व्यस्त हो गए हैं। पहले से ज्यादा अब वेटिंग करना पड़ता है उसका कारण है सर आए दिन विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों की कार्यशालाओं, संगोष्ठियों में अतिथि के तौर जाते रहते हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों की बैठकों में शामिल होते रहते हैं।

कृतित्व : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी लिखित अब तक सृजनात्मक, समीक्षात्मक, अनूदित तथा संपादित आदि 60 से अधिक किताबें प्रकाशित हैं। उन्होंने मानवीय व्यवहार, जीवन मूल्य, अविश्वास, भ्रष्टाचार, पारिवारिक विघटन, अनास्था, छल, फरेब, अव्यवस्था, अराजकता आदि पर अपनी कलम चलाई है। उनके कृतित्व के अनेक पहलू हैं।

सृजनकार : प्रो. (डॉ.) चव्हाण जी मौलिक सृजनकार हैं। उनकी हर रचना मौलिक चिंतन और नए विषय को जन्म देती है। उदा. 'जय बोलनेवाले' (2005), 'जरा याद करो कुर्बानी' (2005), 'आधुनिक हिंदी कालजयी साहित्य' (2002), 'मीडियाकालीन हिंदीः स्वरूप एवं संभावनाएँ' (2005), 'विश्वमंच पर हिंदीः विविध आयाम' (2021) आदि रचनाएँ उनके सृजनकार होने का प्रमाण है। उनके सृजन की हर रचना का विषय न्यारा और अनोखा होता है। उनका सृजन समाज में समता, मानवता, बंधुता और न्याय की वकालत करता है और विश्वबंधुत्व की कामना करता है।

समीक्षक : प्रो. चव्हाण जी का कृतित्व प्रथमतः एक समीक्षक के रूप में उभरकर सामने आता है। प्रो. चव्हाण जी द्वारा लिखित 'उपन्यासकार राजेंद्र यादव' (1994), 'राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन' (1995), 'समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष (हिंदी तथा मराठी उपन्यासों के संदर्भ में)' (2008), 'विमर्श के विविध आयाम' (2008) 'दलित और आदिवासी साहित्य चिंतन के आद्य बिन्दु' (2021), 'साहित्यक शोध और वोध' (2021), 'सदी का श्रेष्ठ साहित्य और साहित्यकार' (2022) आदि ग्रंथ उनके समीक्षक होने का प्रमाण देते हैं। प्रो. (डॉ.) अशोक कामत के अनुसार "एक तगड़ा साहित्य समीक्षक डॉ. अर्जुन चव्हाण में देखा जा सकता है। राजेंद्र यादव के कथा–साहित्य

का मर्म ही उन्होंने स्पष्ट कर दिखाया है। आधुनिक हिंदी का कालजयी साहित्य और साहित्यकारों की समीक्षा तथा विश्वमंच पर हिंदी... जैसे उनके करीबन बीस ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं।''[4] कहना आवश्यक नहीं कि प्रो. अर्जुन चव्हाण साहित्य समीक्षा के मर्मज्ञ हैं और बेबाक समीक्षक भी हैं।

कुशल प्राध्यापक : डॉ. चव्हाण जी अध्यापकों के अध्यापक हैं। वे कठिन से कठिन विषय को बड़ी सरलता और सहजता से समझाते हैं। ज्ञान के प्रति निष्ठावान, कर्तव्य के प्रति सचेत और अनुशासनप्रिय अध्यापक के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। वे एक चिंतनशील एवं प्रतिभाशाली अध्यापक हैं। उनकी रचनाधर्मिता, आत्मीयता और प्रेरणादायी सौहार्दता छात्रों को प्रेरित करती है। उन्होंने कई महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया है। शिवाजी विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक, सहयोगी प्राध्यापक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष के रूप में 35 साल अध्यापन कार्य किया। उनके मार्गदर्शन में आज कई छात्र विभिन्न स्कूल–कॉलेजों में अध्यापक–प्राध्यापक, प्राचार्य बने हुए हैं। प्रो. (डॉ.) अशोक कामत के अनुसार "मेरे परिचय में डॉ. अर्जुन चव्हाण से तुलना की जा सके, ऐसा कोई दूसरा हिंदी विभागाध्यक्ष नहीं रहा। उत्तम अध्यापन और शोधार्थियों के लिए यथोचित मार्गदर्शन का कौशल होने के कारण वे छात्रप्रिय रहे। यही गुण उनकी शक्ति बना है।''[5] स्पष्ट है कि डॉ. चव्हाण जी कर्मफल की अपेक्षा विना कर्म करते रहते हैं। वे प्रदीर्घ काल तक साहित्य के माध्यम से समता, मानवता, वंधुता और न्याय जैसे जीवन मूल्य नई पीढ़ी को देते रहे हैं। उन्होंने अपने प्राध्यापकीय जीवन यात्रा में अनेक उतार–चढ़ावों को देखा और अनेक तूफानों का सामना किया, लेकिन उन्होंने अपने कर्तव्य से कभी मुँह नहीं मोड़ा। प्रो. (डॉ.) केशव प्रथमवीर के शब्दों में–"यह पट्ठा 'सव्यासाची' है। (दोनों हाथों से बाण चलाने वाले 'अर्जुन') न रूका, न झुका। अड़ा रहा, खड़ा रहा। चढ़ता गया, बढ़ता गया। साजिश को साहस से ध्वस्त कर दिया और प्राध्यापकीय जिम्मेदारियों का वखूवी निर्वाह करते हुए, उनकी कलम निरंतर चलती रही है। अतः उनके नाम पर अनेक पुस्तकें हैं।''[6] इसमें संदेह नहीं कि अपने संघर्षभरी अध्यापकीय यात्रा से वे कभी बिखरे नहीं बल्कि निखरते गए। साजिश को हिम्मत के साथ ध्वस्त करते रहें और जिम्मेदारियों को भी निभाते रहें।

आदर्श विभागाध्यक्ष : प्रो. चव्हाण जी कई बार शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने हिंदी विभाग के माध्यम से हजारों छात्रों के जीवन को आकार देने का कार्य किया। उनके निर्देशन में 34 छात्र एम. फिल. और 24 छात्र पीएच. डी. प्राप्त हैं जो विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। आज भी पाँच शोध छात्र उनके निर्देशन में शोध कार्य कर रहे हैं। हिंदी विभाग का हर छात्र उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हो

रहा है। ज्ञानार्जन हेतु शोध छात्र हमेशा उनका साथ देते रहे। महाविद्यालयीन अध्यापक भी हमेशा हिंदी विभाग से जुड़े रहे। विभाग में आयोजित अनेक कार्यक्रमों एवं संगोष्ठियों का हिस्सा बनते रहे बिल्कुल जिज्ञासु श्रोता की तरह। प्रो. चव्हाण जी की अध्यक्षता में विभाग आगे बढ़ता रहा। उनकी अध्यक्षता में प्रसिद्ध कथाकार राजेंद्र यादव, विख्यात समीक्षक डॉ. नामवर सिंह, डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, लेखक गोविंद मिश्र, महिला कथाकार मैत्रेयी पुष्पा, सुप्रसिद्ध समीक्षक मैनेजर पांडेय और नाटककार डॉ. नरेंद्र मोहन जैसे नामी विशेषज्ञ संगोष्ठियों और अधिवेशनों का हिस्सा बनते रहे।

संपादकः प्रो. चव्हाण जी एक अच्छे संपादक भी हैं। उन्होंने अनेक हिंदी तथा मराठी ग्रंथों का संपादन किया है। 'साहित्य मंजूषा' (2001), 'साहित्य विविधा' (2001), 'कहानी कलश' (2001), 'संस्मरण वाटिका' (2001), 'मध्ययुगीन काव्य–पीयूष' (2001), 'अभिनव काव्य' (2001), 'कहानी के प्रतिमान' (2003), 'निबंध के प्रतिमान' (2003), 'कविता के प्रतिमान' (2004), 'गद्य के रंग' (2004), 'काव्य–अभिलाषा' (2004), 'व्यावहारिक हिंदी' (2004), 'वाणिज्य व्यवहार' (2004), 'कथालोक' (2005), 'श्रेष्ठरंग एकांकी' (2005), 'मध्यकालीन काव्यालोक' (2005), 'आधुनिक काव्यालोक' (2005), 'युवक भारती' (2006), 'साहित्य आलोक' (2007), 'व्यावहारिक हिंदी' (2007), 'साहित्यालोक' (2007), 'भटको नहीं धनंजय तथा व्याकरण' (2007), 'व्यावहारिक हिंदी' (2007), 'प्रयोजनमूलक हिंदी' (2008), 'हिंदी मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य' (2008), 'आधुनिक गद्य' (2008), 'मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य' (2008), 'अनुराधा गुरवः व्यक्ति आणि वाङ्मय' (2017), 'डॉ. सुनीलकुमार लवटे और अमाप माणूस' जैसे अनेक महत्वपूर्ण एवं स्तरीय ग्रंथों का संपादन उन्होंने किया है। जैसे मूर्तिकार मूर्ति को आकार देता है वैसे उनके अंदर छिपा संपादक छेनी और हथौड़ी के माध्यम से विभिन्न नवलेखकों को आकार देता है। उनका संपादन कार्य हमेशा दूसरों को भी संपादक तथा लेखक बनने की प्रेरणा देता है।

अनुवादक : प्रो. चव्हाण जी एक अच्छे अनुवादक हैं। इतना ही नहींय अनुवाद की प्रविधि और प्रक्रिया पर उनकी 'अनुवाद चिंतन' (1998) और 'अनुवाद : समस्याएँ एवं समाधान' (1999) ग्रंथ देशभर में प्रसिद्ध हैं और हर विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में संदर्भ ग्रंथ के रूप में जुड़ी हुई है। खास बात यह कि वर्ष 2003 में उनके 'अनुवादः समस्याएँ एवं समाधान' ग्रंथ के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलविहारी वाजपेयी के हाथों अहिंदी भाषी हिंदी लेखक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने 'डेराडंगर' (2001), 'क्षितिज स्पर्श', 'होटल मेरा देश', 'क्रांति संग्राम', 'अंधेरे में बैठा काला मद्दर बैल', 'दक्षिण महाराष्ट्र के बहिष्कृत समाज की मानगाँव परिषद', 'कैलास गढ़ी

की स्वारी' आदि किताबों का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया है; जो उनके अनुवादक होने का पुख्ता सबूत है। इस संदर्भ में प्रो. (डॉ.) माधुरी छेडा ठीक ही लिखती है–"आज उनके नाम पर ऐसी कई किताबें मिलती हैं; जो छात्रों और अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं। मैंने देखा कि साहित्य के साथ–साथ उन्हें भाषा के प्रयोजनमूलक और कार्यालयीन रूप में बहुत रुचि है। इसी में अनुवाद के प्रति भी उनकी विशेष रुचि रही है। उन दिनों ये सारी नई संकल्पनाएँ थीं। इन्हें लेकर छात्र–वर्ग हमेशा परेशान रहता था। इस दृष्टि से अर्जुन चव्हाण जी की पुस्तकों ने छात्रों एवं अध्यापकों का सही मार्गदर्शन किया।"[7] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि अनुवाद के प्रति गहरी रुचि रखने वाले प्रो. चव्हाण जी अपने रूतबे से अकादमीय यात्रा में अविरत आगे बढ़ते रहे हैं।

यात्रावृत्तांतकार : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी ने रूस, मॉरीशस और उजबेकिस्तान जैसे देशों में की यात्रा की है। मॉरीशस यात्रा के दौरान जो अनुभव आए वे 'मॉरीशस एक सांस्कृतिक यात्रा' नामक यात्रा वर्णन में प्रस्तुत है। अपने ग्रंथ की भूमिका में वे लिखते हैं– "मेरी यह विनम्र धारणा है कि एक हजार किताबें पढ़ने से उतना नहीं पा सकते जितना एक लम्बी यात्रा से।"[8] प्रस्तुत यात्रा वर्णन चित्रात्मक एवं रोचक बन पड़ा है। प्रस्तुत यात्रा वर्णन पढ़ने के बाद मॉरीशस का प्राकृतिक वातावरण हू–ब–हू हमारे सम्मुख खडा होता है। यात्रा वर्णन में मॉरीशस का शिवसागर रामगुलाम इंटरनेशनल एअरपोर्ट के विभिन्न स्थानों का वर्णन सजीव बन पड़ा है। मॉरीशस के मराठी भाषी महेश का आत्मीय और रोचक संवाद पाठकों को अपनेपन का एहसास दिलाता है।

अनुसंधाता : गत साढ़े तीन दशक के अनुभव संपन्न प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी एक कुशल शोध निर्देशक हैं। आपके निर्देशन में 24 छात्र पीएच. डी. उपाधि प्राप्त हैं और 5 छात्र कार्यरत है। साथ ही 34 छात्र आपके निर्देशन में एम. फिल. उपाधि प्राप्त हैं। अनुसंधाता के रूप में जब वे छात्रों को मार्गदर्शन करते हैं तब छात्र की योग्यता के अनुसार उसको विषय देते हैं। उनका सटीक मार्गदर्शन छात्रों को शोध कार्य पूरा करवाने में मजबूर कर देता है। उनकी खासियत यह है कि शोध निर्देशक के रूप में उनके हर छात्र का विषय नया और अनोखा होता है। पीएच.डी. उपाधि प्राप्त उनका एक भी छात्र आज तक बेरोजगार नहीं है। सभी छात्र किसी–न–किसी महाविद्यालय में कार्यरत हैं। आज अवकाश ग्रहण करने के बावजूद वे शोध छात्रों को मार्गदर्शन करते हैं। अध्यापक–प्राध्यापक और नए अनुसंधाताओं को मार्गदर्शन करते हैं। उनके शोध छात्र डॉ. विनायक खरटमल के शब्दों में– "मेरे आदरणीय गुरु डॉ. अर्जुन चव्हाण एक व्यक्ति नहीं बल्कि अनेक शक्तियों का एक अखंड तथा समृद्ध भंडार

हैं, जिनके संपर्क में आने से शिष्य का पूरी तरह से कायाकल्प हो जाता है। जिन छात्रों को उनका स्नेह तथा मार्गदर्शन मिलता, उनका जीवन स्वर्ण जैसा मूल्यवान बन जाता है।''[9] कहना आवश्यक नहीं कि प्रो. चव्हाण जी एक चिंतनशीन शोध निर्देशक एवं अनुसंधाता हैं। अखंड उत्साह से सराबोर प्रो. चव्हाण जी शोध निर्देशक के तौर पर जब मार्गदर्शन करते हैं तब एक ओर उनकी वाणी की मिठास में सरस्वती वास करती हुई नज़र आती है तो दूसरी ओर उनके भीतर का अन्वेषक शोध की नई–नई दिशाओं का दिग्दर्शन करता है।

कवि : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी केवल अध्यापक ही नहीं बल्कि उत्कृष्ट कवि भी हैं। सृजनात्मकता उनका आंतरिक गुण है। व्यक्ति के अंदर की सृजनात्मकता विभिन्न विधाओं का रूप लेकर प्रकट होती है। उनकी कविता इन्सानियत का जयघोष करती है। 'ओ री प्रौद्योगिकी' काव्य संग्रह की भूमिका में कवि लिखता है–"कविता पाठक को कुछ दिला देती है, रुला देती है, दहला देती है और समाज विरोधी तत्त्वों के लिए बला बनती है। वह कवि के कलम को नोक देती है, सियासी आलम को रोक देती है। विचारों का जल देती है और मुकाबले को बल देती है। कभी वह चिंघाड़ती है। कभी दहाड़ती है।''[10] साहित्य शिल्पी डॉ. अर्जुन चव्हाण की उपरोक्त मान्यता संवेदनशील पाठक को सोच–विचार करने के लिए मजबूर कर देती है और कविता शब्द को भी परिभाषित करती है। उनके 'जय बोलनेवाले' और 'ओ री प्रौद्योगिकी' कविता संग्रह इन्हीं स्थितियों का प्रमाण देते हैं। उनकी कविता सामाजिक एवं राजनीतिक विद्रुपताओं, विडम्बनाओं, विषमताओं, विसंगतियों एवं विरूपताओं का पर्दाफाश करती है। उनकी कविता एक ओर दबे, कुचले वर्ग के प्रति आस्था और निष्ठा प्रकट करती है तो दूसरी ओर पाखंडी और ढोंगी व्यक्ति का जमकर विरोध करती हैं–

"गधे ने खोला/संगीत का क्लास।
कोयल फेल/और कौवा पास।।
लोमड़ी बनी/जज–अधिकारी।
बकरी को फाँसी/और भेड़िया बरी।।''[11]

उक्त उद्धरण से स्पष्ट होता है कि कवि वर्तमान स्थिति का बेबाक बयान करता है। आज का प्रजातंत्र मैनेजतंत्र बन गया है। सबूदर शिष्टाचार पर भ्रष्टाचार हावी हो चुका है। फलतः समाज में अराजकता फैलती जा रही है; जो कवि की कविता का विषय वना हुआ नजर आता है।

गजलकार : डॉ. चव्हाण जी की रचनाएँ मौलिकता को प्रधानता देती है और समीक्षा रचना के नये मापदंड स्थापित करती है। उनका समग्र रचना संसार सामाजिक प्रतिवद्धता, मानवता, समता, बंधुता और वसुधैव कुटुंबकम् की

अवधारणा को साकार करता है। उनकी गजलें सुव्यवस्था का समर्थन करती हैं और अव्यवस्था या अराजकता की पोल खोल देती हैं। स्वयं उन्हीं के शब्दों में—

'खलनायक वाले सब नायक लगने लगे हैं;
चिल्लाने वाले अब गायक लगने लगे हैं!'

स्पष्ट है कि मूल्यों की हिफाजत में गजलकार का यह कड़ा प्रहार वर्तमानकालीन व्यवस्था के यथार्थ को रेखांकित करता है। 'गजल/इंडिया डॉट कॉम', 'गालिब पूँजी', 'दुष्यंत मेरा लक्ष्य है', 'कोरोना की कृपा से', 'कश्ती लेकर हम हैं', 'तब दिवाली है', 'हमारे प्यारे देश से' और 'दस्तक दोस्ती के दास्तान की' आदि एक दर्जन से अधिक गजल–संग्रह उनको कीर्तिमान स्थापित करने वाले गजलकार के रूप में प्रमाणित करते हैं। विश्वास है कि गजल के क्षेत्र में उनका लेखन कार्य निश्चित रूप से नया कीर्तिमान सिद्ध होगा।

निबंधकार : प्रो. (डॉ.) चव्हाण जी एक व्यंग्य निबंधकार के रूप में भी हमारे सामने आते हैं। उनके द्वारा लिखित 'जरा याद करो कुर्बानी' वैचारिक व्यंग्य निबंध का संग्रह है। इस पर मुंबई विश्वविद्यालय में एम. फिल. उपाधि हेतु शोध कार्य संपन्न हुआ है। इस पर शोध पत्र भी लिखे गए हैं।

लघुकथाकार : प्रो. (डॉ.) चव्हाण जी एक लघुकथाकार हैं। उन्होंने लगभग 65 लघुकथाएँ लिखी हुई हैं। 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित 'गूँगा वहरा' लघुकथा को वर्ष 2011 का उत्कृष्ट लघु कथा पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उन्होंने 'गूँगा बहरा तथा अन्य कहानियाँ' नाम से एक कहानी संग्रह भी लिखा है। 'अमीर और गरीब', 'शुभकामनाओं का हकदार', 'दो वृद्धाश्रमवासी' जैसे कहानियाँ सोच–विचार करने के लिए मजबूर करती हैं। उनकी लघुकथाएँ मूल्य विघटन, विसंगतिपूर्ण माहौल और बिखरते पारिवारिक संबंधों को अभिव्यक्त करती हैं। 'अमीर और गरीब' लघुकथा गरीबी से परेशान और भूख से बेचैन मेधावी छात्र की कथा है। 'शुभकामनाओं का हकदार' लघुकथा में पढ़ा–लिखा व्यक्ति साँप की तरह जहरीला बनता नजर आता है। कहना आवश्यक नहीं कि डॉ. चव्हाण जी एक सशक्त लघुकथाकार भी हैं।

अन्वेषक : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा अनुदानित 'अनुवाद : स्वरूप और समस्याएँ' तथा 'समकालीन हिंदी तथा मराठी बृहत् उपन्यासों का वैचारिक पक्ष' दो बृहत् शोध परियोजनाएँ पूरी की हैं। वे विभिन्न विषयों पर 150 से अधिक शोधपत्रों एवं लेखों का प्रकाशन कर चुके हैं। इसमें राष्ट्रीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में 125 और अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में 25 से अधिक शोध पत्र शामिल हैं। विभिन्न परियोजनाओं को पूरा करते समय वे बहुआयामी अन्वेषक के रूप में उभरकर हमारे सामने आते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व हिंदी साहित्यकाश में एक सूर्य के समान तेजोमयी है। अपनी प्राध्यापकीय जीवन यात्रा में अनेक तूफानों का सामना करने वाले प्रो. अर्जुन चव्हाण जी साहस और संघर्ष से निरंतर निखरते गए। घन की चोट वे खाते रहें, मगर हीरे की तरह चमकते रहें। अनेक पारिवारिक सुखों की कुर्बानी देकर उन्होंने अकादमिक यात्रा सफल बनाई जो छात्रों के लिए प्रेरणादायी है। प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण जी एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसे हर कोन तथा हर दृष्टिकोण से देखें तो हर बार उनका बहुआयामी व्यक्तित्व नजर आता है। प्रो. चव्हाण जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व लेखक, सृजनकार, कवि, गजलकार, समीक्षक, संपादक, यात्रावृतांतकार, निबंधकार, कथाकार, प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, अनुसंधाता, अन्वेषक, मौलिक चिंतक, प्रभावी वक्ता जैसे अनेक पहलुओं और अनेक आयामों से संपन्न नजर आता है; जो उनको सृजनधर्मी, अन्वेषी और बहुआयामी व्यक्तित्व से हमेशा आलोकित कर रहा है और करता रहेगा।

संदर्भ

1) डॉ. मनोहर भंडारे – इक्कीसवीं सदी के विविध विमर्श, पृष्ठ दृ 646, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्कारणः 2023
2) वही, पृष्ठ – 644
3) वही, पृष्ठ – 644–645
4) वही, पृष्ठ – 543.
5) वही, पृष्ठ – 543.
6) वही, पृष्ठ – 551.
7) वही, पृष्ठ – 546.
8) प्रो. अर्जुन चव्हाण–मॉरीशस एक सांस्कृतिक यात्रा, भूमिका से, पृष्ठ–7, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करणः 2016.
9) डॉ. मनोहर भंडारे – इक्कीसवीं सदी के विविध विमर्श, पृष्ठ दृ 671, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्कारणः 2023.
10) प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण – ओ री प्रौद्योगिकी, अप्रकाशित काव्यसंग्रह की भमिका से।
11) प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण – जय वोलनेवाले , पृष्ठ –15, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्कारणः 2005

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
ई–मेलः dipaktupe1980@gmail.com